शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता

आज आवश्यकता है भारतीय वाङ्‌गमय में स्थापित उच्चादर्शों, मूल्यों को समकालीन समस्याओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में रखकर देखा जाए एवं वैश्विक दृष्टि सम्पन्न मानवीय मूल्यों एवं तकनीकी उपलब्धियों को आत्मसात करते हुए उन आदर्शों मूल्यों को स्थापित किया जाये जो भौतिकवादी आदर्शों से उत्पन्न अन्तर्विरोधों एवं उपभोक्ता केन्द्रित बाजारवादी व्यवस्था के चंगुल से सम्पूर्ण मानवता को बचा सके। यह आलेख भारतीय समाज विज्ञानों के समक्ष खड़ी इन्हीं चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करता है।

विषय संकेत:- *भारतीय समाज विज्ञान, विकास के मॉडल, औद्योगिक क्रांति, पूँजीवाद, भारतीय अर्थशास्त्र, वैश्विक कल्याण, भारतीय चित्त एवं मानस*

विश्व में औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ पूँजीवाद प्रणाली के साथ हुआ किन्तु कालान्तर में यह शोषण का दर्शन बनकर रह गया और 1929-32 की महामंदी ने तो इसे नकारा ही साबित कर दिया। इसके विपरीत मार्क्स के दर्शन पर आधारित साम्यवादी प्रणाली ने प्रेरणा और पहल की समस्यायें उत्पन्न कर दी। यह प्रणाली भी सोवियत यूनियन और इसके सहयोगी राज्यों के पतन के साथ शीघ्र ही समाप्त प्राय: हो गयी। आज का चीन साम्यवाद की बजाय बाजार अर्थव्यवस्था के काफी कुछ निकट आ गया है। अत: आज तो विभिन्न रूपों एवं प्रकारों में बाजारवाद ही चल रहा है। किन्तु हर क्षण वह अनेक कठिनाइयों व समस्याओं से ग्रस्त भी हो जा रहा है।

2008 में अमेरिका से प्रारम्भ हुई वैश्विक मंदी और वैश्विक वित्तीय संकट अब समूचे विश्व में फैल गया है। अमेरिका और यूरोप के अधिकांश देश कर्ज में डूबे हैं, बैंक दिवालिया हो गये हैं, बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। स्पेन, पुर्तगाल, इटली और ग्रीस जैसे देशों ने तो समूची योरोपीय अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिये ही संकट पैदा कर दिया है। इस प्रकार इस वैश्विक आर्थिक संकट ने स्वतंत्र एवं अनियंत्रित बाजारों वाले उन्मुक्त पूँजीवादी दर्शन के खोखलेपन को जग जाहिर कर दिया है। अभी हाल ही में अमेरिका में Occupy wall street (OWS) आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है जिसका जन्म आय की असमानताओं में से हुआ है। अमेरिका में रह रहे दुनिया की 1 प्रतिशत जनसंख्या का 40 प्रतिशत परिसम्पति और 20 प्रतिशत आय पर कब्जा है। इसलिये यहाँ आन्दोलनकारी कारपोरेट लालच और असमानता के विरोध में आन्दोलन कर रहे हैं। अमेरिका की वर्तमान राजनैतिक-आर्थिक प्रणाली का वर्णन करते हुए जोसेफ स्टिगलिट्स कहते हैं कि यह 1 प्रतिशत की 1 प्रतिशत द्वारा 1 प्रतिशत के लिए चलाई जा रही व्यवस्था है। इस प्रकार यह अन्याय और असमानता के सिद्धान्त पर टिकी और चल रही प्रणाली है। 'आर्थिक संवृद्धि होने पर सामान्य व्यक्ति तक इसका लाभ स्वत: पहुँच जायेगा' वाली Trickle down Theory पूर्णत: असफल सिद्ध हो गई है, परिणामस्वरूप विश्वभर में विषमता लगातार बढ़ रही है। चीन, भारत, रूस और ब्राजील जैसे देशों की अर्थव्यवस्थायें तुलनात्मक रूप से मजबूत मानी जाती हैं। पर एक ध्रुवीय वैश्विक परिस्थिति, ईंधन व कच्चे माल के लगातार बढ़ते दामों के कारण यहाँ भी संकट व अस्थिरता का महौल बन रहा है।

विकास के वर्तमान मॉडल ने मनुष्यों के लिए ही नहीं बल्कि समूचे प्राणिमात्र के लिए ही अस्तित्व का संकट खड़ा कर दिया है। जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण एवं मुद्रा प्रदूषण के कारण हमारे चारों ओर प्रदूषित वातावरण का घेरा गहरा होता जा रहा है। पर्यावरण ह्रस, प्रदूषण स्तर में वृद्धि, वैश्विक तपन व जलवायु परिवर्तन जैसी घटनाओं के कारण समूची पृथ्वी का अस्तित्व ही संकट में पड़ता जा रहा है। नैतिक, सांस्कृतिक

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292
An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित
Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

एवं मानवीय मूल्यों में गिरावट तथा पारिवारिक एवं सामुदायिक जीवन के ह्रस ने स्थिति को और अधिक खराब बना दिया है। अकेलापन-सूनापन, बलात्कार-व्यभिचार, नशाखोरी, स्वच्छन्द यौनाचार, नग्नता का नंगा नाच, तनाव व अवसाद से ग्रस्त जीवन तथा सामाजिक संघर्षों की बढ़ती हुई प्रवृत्तियाँ एवं घटनायें समूचे सामाजिक ताने-बाने को ही ध्वस्त करती जा रही हैं। इतना ही नहीं, इसके परिणामस्वरूप भाव व भावनायें, मानवीय सम्बन्ध और संवेदनायें भी प्रदूषित होती जा रही हैं। वर्तमान विकास का मॉडल शोषणकारी है, इसने हर स्तर पर एक इकाई द्वारा दूसरी इकाई के शोषण की प्रक्रिया को जन्म दिया है। भारत सहित दुनियाँ के अधिकांश देशों में भूख, बीमारी, गरीबी, बेरोजगारी, विषमता का एक दुष्चक्र बना गया है। भारत में तो योजना आयोग ने प्रति व्यक्ति दैनिक उपभोग शहरी क्षेत्र में 28 रूपये और ग्रामीण क्षेत्र में 22 रूपये गरीबी-रेखा का आधार बताकर गरीबों के साथ क्रूर मजाक ही कर डाला है। समूचा विश्व ही बेतुकी असमानता की ओर बढ़ता जा रहा है। संचार लगभग आधी आबादी (अर्थात् 3 बिलियन से अधिक लोग) 2 डालर प्रतिदिन से कम पर गुजारा करते हैं, जबकि 1.3 बिलियन लोगों को प्रतिदिन 1 डालर से भी कम ही मिल पाता है। कम से कम 80 प्रतिशत जनसंख्या प्रतिदिन 10 डालर से भी कम पर गुजारा करती है। विश्व की 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या उन देशों में रहती हे जहाँ आय की असमानतायें तेजी से बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार, आर्थिक अपराध, घूसखोरी और कालेधन में लगातार हो रही वृद्धि ने आम व्यक्ति के दु:ख दर्द को और अधिक बढ़ा दिया है। उपभोग वृद्धि को विकास का इंजिन बताकर विज्ञापन-प्रेरित भोगवादी जीवन शैली को बढ़ावा दिया जा रहा है। विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व व्यापार संगठन जैसी संस्थाओं के माध्यम से विश्व के छोटे व गरीब देशों व समाजों को आर्थिक साम्राज्यवाद की रिगफ्त में फंसाया जा रहा है ऊर्जा व जल संकट भी दिनोदिन गहराता जा रहा है।

इसके अलावा, समूचे संसार में आतंकवाद, उग्रवाद, अलगाववाद, हिंसाचार, मतांतरण, कठपुल्लापन, भोगवाद एवं अनाचरण की प्रवृत्तियाँ तेजी से बढ़ती जा रही हैं। और सबसे अधिक आश्चर्यजनक बात तो यह है कि इन सब प्रवृत्तियों को वैचारिक आधारभूमि प्रदान करने वाली संकल्पनायें, अवधारणायें, विश्लेषण-विवेचन एवं व्याख्यायें बड़ी मात्रा में प्रस्तुत की जा रही हैं। आज के समाज वैज्ञानिकों को वैचारिक आधार पर इनका उत्तर तलाशने की आवश्यकता है। समूचा विश्व अपराधों की गिरफ्त में जकड़ा जा रहा है और तथाकथित वैज्ञानिक प्रगति, शिक्षा और आर्थिक विकास भी इसका समाधान प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं। इस दृष्टि से हाल ही में प्रकाशित कुछ आंकड़ें चौकाने वाले हैं। इनके अनुसार जेलों की कुल संख्या अमेरिका में 4575, भारत में 1393 और ब्राजील में 1312 है, कैदियों की कुल संख्या अमेरिका में 10.6 प्रतिशत, भारत में 11.5 प्रतिशत और ब्राजील में 16.8 प्रतिशत है। एक लाख आबादी पर प्रतिवर्ष हत्या की दर अमेरिका में 5, भारत में 3.4 और ब्राजील में 25 है। अमेरिका, यूरोप एवं अरब देशों के हाल ही के घटनाक्रम अस्थिरता एवं अराजकता की ओर अग्रेतर हो रहे विश्व के पर्याप्त संकेत हैं। इसके साथ ही, वैश्विक स्तर पर बनते-बिगड़ते राजनैतिक-आर्थिक ध्रुवीकरण, विभिन्न देशों के बीच सीमा, जल एवं प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा जमाने की प्रवृत्ति में से उपज रहे विवाद एवं संघर्ष, विभिन्न आतंकवादी गुटों के बीज गठजोड़ एवं विभिन्न देशों द्वारा इनका प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष समर्थन-संरक्षण, विभिन्न देशों में कमजोर होती कानून-व्यवस्था में से उपज रही अराजकता आदि भी घोर चिन्ता के कारण बने हुए हैं। अपने ही विचार, वाद एवं पंथ को सही मानने और बाकी को गलत मानकर येन-केन प्रकारेण अपने जैसा बनाने की मनोवृत्ति में से आतंकवाद जन्म लेता है। विश्व के समृद्ध एवं शक्तिशाली देश एवं उनकी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति भी इसे बढ़ावा दे रही है।

वैश्विक परिदृश्य के साथ-साथ हमें भारत के परिदृश्य को भी ठीक से समझना-परखना होगा। भारत का विस्तृत-विशाल भू-भाग और विश्व के मानचित्र में उसकी भू-राजनैतिक-रणनीतिक दृष्टि से अवस्थिति, विशाल कृषि योग्य भूमि, छः ऋतुएँ, समृद्ध जैव संपदा, पर्याप्त खनिज सम्पदा, विश्व में दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या, विशेषकर सर्वाधिक युवा जनसंख्या, विशाल श्रमशक्ति, वैज्ञानिक-तकनीकी विशेषज्ञों की बहुत बड़ी मानवशक्ति जिसने सूचना प्रौद्योगिकी, बी.पी. ओ., के.पी.ओ., प्रबन्धन, बैकिंग व वितीय क्षेत्र, शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं तथा विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश के भीतर और बाहर असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की है, जी. डी. पी. एवं प्रति व्यक्ति जी.टी.पी. में अच्छी संवृद्धि दर, पर्याप्त ऊँची बचत दर, समृद्ध

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

सांस्कृतिक-सामाजिक परम्परायें व संस्थायें भारतीय समाज के उज्जवल पक्ष हैं। पर दूसरी ओर देश की आधी से अधिक जनसंख्या का गरीबी रेखा के नीचे गुजर करने की मजबूरी, 5 करोड़ से अधिक कुपोषण से ग्रस्त लोग, बढ़ती बेरोजगारी एवं विषमता, भुखमरी एवं खाद्यान्न सुरक्षा के सामने गहराता संकट, बीमारियों एवं महामारियों से ग्रस्त व पस्त देश की बहुत बड़ी जनसंख्या, स्वच्छ पीने के पानी सहित सैनिटेशन की सुविधाओं का लगभग अकाल, देश की आन्तरिक एवं बाहरी सुरक्षा पर गहराता संकट, देश की समाज व्यवस्था को उध्वस्त करने वाली आतंकवादी-उग्रवादी संगठनों वं घटनाओं का लगातार बढ़ते जाना, चरमराती परिवार व्यवस्था, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों में निरन्तर आती आ रही गिरावट, विदेशी कम्पनियों की बढ़ती जा रही जकड़न आदि हमारे लिए भी चिन्ता एवं चिन्तन के विषय में बने हुए हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य अनेक विरोधाभासों एवं विसंगतियों का पिटारा है। पिछली दो शताब्दियों के दौरान विज्ञान की सहायता से भौतिक क्षेत्र में अनेक असाधारण उपलब्धियाँ हासिल की है। जीवन की सुख-सुविधा के लिए अनेक उपकरण विकसित हुए है। यातायात एवं संचार क्षेत्र में हुई क्रान्ति ने समूचे विश्व की दूरी को इतना कम कर दिया है। कि अब वैश्विक ग्राम (Global Village) की चर्चा होने लगी हे। मनुष्य अब तो अनेक ग्रहों सहित अन्तरिक्ष की यात्रा पर भी जाने लगा है। स्वचालित यंत्रों व उपकरणों के सहारे न्यनतम मानव श्रम के द्वारा कार्य एवं उत्पादन की गति बहुत बढ़ गई है। अब तो जैसा चाहे वैसा और जब तक चाहे तब तक नया मनुष्य बनाने की भी तैयारियाँ की जा रही हैं। किन्तु इन सबके बीच, मनुष्य-मनुष्य के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं, मन का संताप, अवसाद व तनाव का घेरा गहरा होता जा रहा है, मन का सन्तोष व आनन्द विलुप्त हो रहा है, पर्यावरण ह्रस एवं प्रदूषण के कारण पृथ्वी के अस्तित्व पर ही संकट मंडराने लगे हैं, विभिन्न दर्शनों, सिद्धान्तों व नीतियों की आधार भूमि खिसकती जा रही है, समस्याओं के समाधान के सब प्रयास विफल हो रहे हैं, बल्कि वे नित नई समस्याएँ खड़ी कर रहे हैं। ऐसे में प्रश्न उपस्थिति होता है कि हमारे चिन्तन की दिशा ही तो नही भटक गई है, लगता तो ऐसा ही हे। ऐसी स्थिति में भारतीय चिन्तन की आधार भूमि का सहारा लेकर भारत के समाज विज्ञानियों को विश्वमंगल के लिये युगानुरूप नया चिन्तन प्रस्तुत करने की भूमिका अदा करने के लिए आगे आना होगा।

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों की स्थिति एवं भावी भूमिका की दिशा-

सकारात्मक सोच रखने वाले विश्व भर के चिन्तकों के बीच वैश्विक परिस्थितियों के बारे में एक व्यापक सहमति बनती नज़र आ रही है वे सभी एक वैकल्पिक चिन्तन की तलाश की आवश्यकता को महसूस भी करने लगे हैं। इस दृष्टि से कुछ विद्धानों के विचार द्रष्टव्य है। इवान इलिच ने ''Development Myth'' में कहा है कि ''समय आ गया है जब हम विकास को अशुभ मिथक के रूप में मान्यता दे, जिसकी उपस्थिति ने मेस्सिकों के अस्तित्व को ही समाप्त करने की ठान ली है।'' जेहिक्स् का विचार है कि हमारी वर्तमान आर्थिक चिन्ता में भविष्य के चिन्तन का अभाव है। सैयुअलसन का भी लगभग यही विचार है। उसके अनुसार अमेरिकी अर्थशास्त्री रखैल जैसे हो गये हैं। डेनियल वेल द्वारा संपादित ''Crisis in Economic Theory'' में वर्तमान आर्थिक चिन्तन की बेचारगी का वर्णन किया गया है। 2. मई 1991 में 'वेदिकन एन साइक्लिल' ने दोनों ही प्रणालियाँ - पूँजीवादी ओर साम्यवाद की असफलता की चर्चा की है और नवीन चिन्तन की आवश्यकता बताई है। 1990 में मास्कों में सम्पन्न 'Word Trade Union Conference' ने बाजार की अर्थव्यवस्था और साम्यवाद दोनो ही असफलता की ओर ध्यान दिलाया था और एक तीसरे विकल्प को ढूँढ़ने की आवश्यकता जताई थी। आल्विन टाफलर ने अपनी पुस्तक 'फ्यूचर शॉक' में तकनोलॉजी पर सामाजिक नियंत्रण की बात की हे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि, ''प्रभू ने अलग-अलग लोगों को अलग-अलग प्रश्नपत्र हल करने के लिए दिए हैं, अतएव नकल उपयोगी नहीं होगी'' W.A. Lewis ने 'Principles of Economic Planning में देश के विकास में राष्ट्रभाव का महत्त्व बताते हुए कहा था कि, ''यदि लोगों में राष्ट्रभाव है, अपने पिछड़ेपन की जानकारी है और उनमें आगे बढ़ने की चिन्ता है तो वे इच्छापूर्वक कठिनाइयों का वहन करने और अपने मूल्यों का परिमार्जन करने को तत्पर रहे हैं और स्वयं उत्साह के साथ देश को पुन: शक्तिशाली बनाने के कार्य में जुट जाते हैं। ''इसी क्रम में ''Man Have Forgotten God'' में

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

Solzhenitsyn ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति होना चाहिए न कि भौतिक उन्नति। राष्ट्रवादी चिन्तक श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी कहा करते थे कि, दुर्भाग्य है कि वास्तविक राष्ट्रवादी बुद्धिमान व्यक्ति भी पाश्चात्य प्रभाव से मुक्ति का महत्त्व नहीं समझ पा रहे हैं। ये पाश्चात्य सिद्धान्तकारों के मोह में इतने फँस गये है कि यदि उनका एक सिद्धान्त असफल हो जाता है तो बिना अपनी बुद्धि का प्रयोग किये, किसी दूसरे पाश्चात्य सिद्धान्त की ओर दौड़ पड़ते हैं। विकास और प्रगति के पश्चिमी प्रतिमान निरर्थक और निरूपयोगी हैं, अब तो ऐसा लगता है कि ये भयावह और विनाशकारी भी हैं।

विख्यात इतिहासकार अर्नाल्ड टॉयनबी ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है, ''यह बात पहले से ही स्पष्ट होती जा रही है कि यह अध्याय अगर मानवजाति के आत्मघात से पूर्ण नहीं करना है तो पश्चिमी प्रारम्भ वाले इस अध्याय का अन्त भारतीय ही होना अनिवार्य है। मानवी इतिहास की इस आत्यंतिक भयजनक बेला में मात्र भारतीय मार्ग ही मानवजाति की मुक्ति का एकमेव मार्ग है।'' आज मुख्य प्रश्न यह है कि क्या भौतिक और आध्यात्मिक आयामों का समायोजन संभव है? भारतीय चिंतन परम्परा इन दोनों आयामों का समायोजन करता आयी है। पुरुषार्थ चतुष्ट्य की संकल्पना भौतिक समृद्धि और आध्यामिक उन्नति अर्थात् अभ्युदय और नि:श्रेयस के बीच संतुलन-समन्वय बनाने के लिए ही की गयी थी। अर्थ और काम जीवन के भौतिकवादी तथा धर्म और मोक्ष आध्यात्मिक पक्ष से सम्बन्धित हैं। परिणामत: प्रेरणा दो प्रकार की थी, एक भौतिकवादी और दूसरी अध्यात्मवादी और इन दोनों के एकीकृत रूप से ही समग्र जीवन का विकास हो पाता है। आज की परिस्थिति में इन दोनों पक्षों को समाज विज्ञान में पिरोकर प्रस्तुत करना ही समय की चुनौती है। राष्ट्रीय तत्व एवं सत्व के आधार पर सत्य का साक्षात्कार करते हुए सर्वसमावेशी, सर्वतोमुखी समग्र सामाजिक सुख की दिशा में पहुँच सकने वाले सिद्धान्तों, नीतियों एवं संस्थाओं की संरचना के प्रारूप प्रस्तुत करना ही सामाजिक विज्ञानों का केन्द्रीय उद्देश्य होना चाहिए। इसी आधार पर विभिन्न भूतकालीन एवं वर्तमान घटनाओं, परिस्थितियों एवं नीतियों का विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत कर भावी दिशा का खाका प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

भारत अठारहवीं शताब्दी तक विश्व में आर्थिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अपने विगत लगभग 5000 वर्षों तक सर्वोच्च शिखर पर रहा, उन दिनों अपना चिन्तन काफी कुछ व्यवहार में आता था। किन्तु आगे चलकर हमारे समाज जीवन में कुछ कमियाँ-कमजोरियाँ प्रवेश कर गयी। विशेषकर पिछले 1200 वर्षों के दौरान आये आक्रमणकारियों की मंशा, रणनीति, उनके कृत्यों-कुकृत्यों का हम योजनाबद्ध अध्ययन नहीं कर सके, उसकी आज आवश्यकता है। अपने यहाँ अनेक क्षेत्रों की भौतिक क्षमतायें आक्रमणकारियों से भी अधिक प्रगत थी। परन्तु हमनें रणनीति की दृष्टि से उनका योग्य एवं पूर्ण समायोजन नहीं किया। आगे इस दृष्टि को विकसित एवं क्रियान्वित कैसे किया जाये, इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

अपने देहात स्वावलम्बी थे, छोटे-छोटे राज्य भी पराक्रमी थे। पर राष्ट्रीय शत्रु के प्रतिकार के लिए परस्पर सहयोग की वृत्ति नष्ट प्राय हो गयी थी। समय आने पर राष्ट्र की क्षमताओं का राष्ट्रीय हित के लिए केन्द्रीभूत नियोजन आवश्यक है, यह भाव समाप्त हो गया था। इस दृष्टि से भावी दिशा क्या हो और आवश्यक व्यवस्थायें एवं सावधानियाँ क्या रहे, इस पर अध्ययन आवश्यक है।

भारत के संदर्भ में कुछ और बातों पर भी विचार करना आवश्यक है। हमने संस्कार व्यवस्था में से व्यक्ति को अच्छे गृहस्थ बनाने के तो सफल प्रयत्न किये, पर अच्छे नागरिक बनाने के प्रयास नगण्य ही रहे। इस दृष्टि से संस्कार व्यवस्था की रचना-व्यवस्था-प्रयोग में क्या परिवर्तन-परिवर्धन किया जाना चाहिए? राष्ट्र भावना को परिपोषित करने और राष्ट्रहित में काम करने की आदत डालने के लिये क्या और कैसे किया जाये? गत बारह सौ वर्षों में सर्वांगीण एवं सामुदायिक पुरूषार्थ का आग्रह छोड़कर एक तरफ ऐहिक विमुखता और दूसरी तरफ मौखिक वैश्विकता का प्रदर्शन और व्यवहार में परिवार-केन्द्रित संकुचितता पर एंकाकी आग्रह के कारण समाज में अकर्मण्यता की ओर झुकाव बढ़ा है। इसे ठीक करने की दृष्टि से क्या किया जाये? अपनी शिक्षा व्यवस्था एवं शैक्षिक चिन्तन में और सभी संस्कार व्यवस्थाओं में धर्म, काम, मोक्ष, के इन चारों पहलुओं का सुयोग्य समायोजन करना पड़ेगा। सर्वसामान्य समाज को पौरुष युक्त प्रयत्नों में से राष्ट्रीय, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत उन्नति करने की दृष्टि से ही तैयार करना होगा। आज के प्रश्नों के उत्तर खोजते समय एक ओर हमें

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

अपने तत्वज्ञान का अवलम्बन करना पड़ेगा तथा दूसरी ओर आधुनिक ज्ञान की सभी शाखायें भली प्रकार आत्मसात् कर उनका भी समाज हित के लिये उपयोग कराना पड़ेगा। आध्यात्मिक और विज्ञान के संकलित चिन्तन के प्रकाश में मानवीय प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए हम लोगों को आगे का मार्ग खोजना पड़ेगा। भारतीय चिन्तन में सामाजिक समस्याओं का हल खोजने की जो युगानुकूल क्षमता है और जिसे अपने पूर्वजों ने अनेक रचनाओं द्वारा सिद्ध किया है, उदाहरणार्थ मानसिक तनावों को दूर करने की क्षमता, पर्यावरण सतुलन बिगाड़े बिना भौतिक समृद्धि प्राप्त कर सकना, स्वावलम्बी ग्राम व्यवस्था आदि, ऐसी क्षमता हमें वर्तमान प्रश्नों के संदर्भ में फिर से सिद्ध करनी पड़ेगी। उसी में से अपना सर्वांगीण राष्ट्रीय परम वैभव निर्माण होगा और विश्व में हमारा योग्य स्थान हमें प्राप्त होगा।

आज के समाज वैज्ञानिकों को यह स्मरण रखना होगा कि दृष्टि, विश्वदृष्टि और अन्तर्दृष्टि के बीच परस्पर सम्बन्ध मानकर जो विवेचन-विश्लेषण होगा उसी में से सही समझ विकसित होगी। प्रश्न यह है कि विभिन्न संस्कृति संस्कृतियों-सभ्यताओं, मत-मतान्तरों, मान्यताओं, विचार-प्रवाहों व वर्गों के बीच संघर्ष एवं वैमनस्य की दृष्टि रखकर उनके बीचके भेदों, अन्तरों, विरोधाभासों का अतिरंजित चित्र प्रस्तुत करने वाले अध्ययन-अनुसंधान, विवेचन, विश्लेषण कर और उन्हें सैद्धान्तिक जामा पहना कर इनके बीच अलगाव-दुराव के भाव बढ़ाना कहाँ तक उचित है? आज आवश्यकता तो यह है कि इनके बीच आत्मीय सम्बन्ध एवं सार्थक संवाद की प्रक्रिया को बल देने की दृष्टि से विविधताओं व विचित्रताओं के बीच एकत्व के सूत्र खोजने वाले विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किये जायें, तभी स्थानीय स्तर से लेकर वैश्विक स्तर तक हम सद्भाव, शान्ति और सहयोग की दिशा में आगे बढ़ सकेंगे-सामाजिक एवं मानविकी विज्ञानों को इस चुनौती को स्वीकार करना चाहिए। अब संवाद (Discourse) की दिशा भेदमूलक के स्थान पर समन्वयमूलक, संघर्षमूलक के स्थान पर सहयोग मूलक और अलगावमूलक के स्थान पर एकात्ममूलक होनी चाहिए। पर इसके साथ, विभिन्न वर्गों की समस्याओं-संकटों, कठिनाइयों, अवरोधों-बाधाओं को समझना भी आवश्यक है, पर इस समझ और विवेचन-विश्लेषण में से सर्वहितकारी समाधान निकले, इसकी भी चिन्ता करना आवश्यक है। केवल प्रश्न खड़े करना पर्याप्त नहीं है, प्रश्नों के साथ उत्तर भी तलाशना होगा, और प्रश्नोत्तर के इस खेल में दुराव व दोषारोपण कर समस्याओं के एक स्थान से दूसरे स्थान पर और एक वर्ग से दूसरे वर्ग पर हस्तांतरण के भँवर में ही न उलझ जायें, यह सावधानी भी बरतनी होगी। संवेदनशील एवं सर्वसमावेशी दृष्टि ही इसका उचित समाधान दे सकती है।

भारतीय चिन्तन के अनुसार केवल मनुष्यों के कल्याण का ही चिन्ता करना पर्याप्त नहीं है अपितु अध्यात्मिक एवं वीर शक्ति के माध्यम से हमें तो समूचे प्राणिजगत के कल्याण के लिए प्रयास करना चाहिए। हमारा दर्शन मानता है कि समूचे ब्रह्मण्ड में विश्वचेतना व्याप्त है और हम सबमें उसका अंश विद्यमान है। इसी आधार पर हम अपने अहं को भूलकर विश्व बन्धुत्व के लिए काम करने की आवश्यकता है। 1450 से 1750 के बीच की कालावधि में प्रकृति की प्रतिकूलताओं वाले क्षेत्र में ही अधिकांश वैज्ञानिक एवं दार्शनिक सिद्धान्त विकसित हुए हैं। इसने प्रकृति पर विजय अथवा प्रकृति के शोषण के दृष्टिकोण को जन्म दिया है। आज पर्यावरण ह्रास एवं जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित समस्यायें इसी से उत्पन्न हुई है। इसके विपरीत भारतीय दृष्टि एवं दर्शन मूलतः पर्यावरण प्रेमी रहा है। अतः हमने प्रकृति एवं पर्यावरण के संरक्षण-संवर्धन के मार्ग तलाशे। आज इसी राह पर आगे बढ़ने की आवश्यकता को सब लोग मान्य करने लगे हैं।

यूरोप में अन्धकार युग के बाद जो जागरण काल आया उसने भौतिकतावाद के आधार पर सिद्धान्त व संरचनायें बनाने का काम किया। दूसरी ओर भारतीय चिन्तकों की अध्यात्मिकता को महत्त्वपूर्ण मानते हुए विज्ञान और अध्यात्म के बीच समन्वय बनाने पर जोर दिया। विवेकानन्द कहा करते थे कि ऐसी बहुत सी बाते हैं जिन्हें केवल विज्ञान के माध्यम से नहीं समझाया जा सकता। इसके लिए वेदान्त, उपनिषद एवं अनुभूतियों का सहारा लेना पड़ता है। धीरे-धीरे इन दोनों दृष्टिकोणों का मिलन हो रहा है। विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी की प्रगति महत्त्वपूर्ण है, पर इसके सहारे हम आज के विश्व के सामने उपस्थित सब समस्याओं का समाधान नहीं पा सकते। इसके

शोध संचयन SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

लिए तो हमें भारतीय दर्शन और भारत की सहअस्तित्व मूलक जीवन पद्धति को अपनाने के बारे में गम्भीरता से विचार करना ही पड़ेगा और यही विश्व को भारतीय चिन्तन की देन भी होगी।

भारतीय चिन्तन के अनुसार व्यक्ति और समाज परस्पर संघर्षरत अलग-अलग सत्तायें नहीं है, दोनों परस्पर-निर्भर और परस्पर-पूरक हैं। इसलिये यह प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता कि व्यक्ति समाज के लिए है अथवा समाज व्यक्ति के लिए है। जिस प्रकार एक पेड़ और उसकी शाखाओं को अथवा समुद्र और उसके जलकणों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार व्यक्ति और समाज को भी एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। इसी को समझाते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि, ''समष्टि (समाज) के जीवन में (व्यक्ति) का जीवन समाविष्ट है, अतः समष्टि के सुख में व्यष्टि का सुख भी समाहित है। समष्टि के बिना व्यष्टि का अस्तित्व ही असम्भव है, यही अनन्त सत्य जगत का मूलाधार है। अनन्त समष्टि के साथ सहानुभूति रखते हुए उसके सुख में सुख और उसके दु:ख में दु:ख मानकर धीरे-धीरे अगे बढ़ना ही व्यष्टि का एकमात्र कर्त्तव्य है।'' अतः व्यक्ति और समाज तथा प्रकृति और सृष्टि के बची एकता-एकात्मता बनाये रखना सब प्रकार से आवश्यक एवं हितकर है, भारतीय संस्कृति ने इसी दृष्टिकोण पर जोर दिया है। आधुनिक पश्चिमी चिन्तन एकरूपता पर जोर देता है, किन्तु इसके कारण ही आज अनेक प्रकार की समस्यायें खड़ी हुई हैं। भारतीय चिन्तन ने तो हमेशा से ही विविधता में एकता के सिद्धान्त पर जोर दिया है, इस सूत्र को पकड़कर ही सभी सामाजिक विज्ञानों को काम करना होगा। अनेक चिन्तन धाराओं को मान्य कर उनके अन्तर्निहित समान तत्वों को खोज लेना सामाजिक एकता-समरसता के लिए आवश्यक है। साथ ही, विभिन्नताओं-विविधताओं से विरोध और संघर्ष उत्पन्न ना होने देना भी भारत की सामाजिक दृष्टि रही है। यद्यपि इन दिनों राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में गिरावट आ रही है और भयंकर निराशा की स्थिति है, ऐसी सब परिस्थिति में ही भारतीय चिन्तन का आधार लेकर एक अच्छे भविष्य के सृजन के लिए हम पुरोदय के बीज बो सकते हैं।

विवेकानन्द ने भारतीय चिन्तन दृष्टि की सूक्ष्मता को इन शब्दों में समझाया था, ''वर्तमान काल में एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि अगर ज्ञात और ज्ञेय जगत का आदि और अन्त अज्ञात तथा अनन्त अज्ञेय द्वारा सीमाबद्ध है तो अज्ञात के लिए हम प्रयास ही क्यों करें? क्यों न हम ज्ञात जगत में हो सन्तुष्ट रहें? क्यों न हम खाने, पीने और संसार की किंचित भलाई करने में ही संतुष्ट रहें? इस दृष्टि से तो जानवर संतुष्ट हैं, यही उन्हें जानवर बनाये हुए हैं। तो फिर मनुष्य भी अनन्त की खोज से मुँह मोड़कर वर्तमान जीवन में ही संतुष्ट रहने लगे, तो मानव जाति को एक बार फिर पशुत्व के धरातल पर जाना पड़ेगा। यह परे की खोज ही है जो मनुष्य एवं पशु में भेद करती है। अतः हम अनन्त के बारे में जिज्ञासा किये जाने बिना नहीं रह सकते। यह जो वर्तमान है, व्यक्त है, वह तो अव्यक्त का एक अंश मात्र है। ''पाश्चात्य देशों में धर्म और दर्शन को पृथक भाव से देखा जाता है, किन्तु हिन्दू इन दोनों में इस प्रकार का भेद नहीं देखते। हम धर्म और दर्शन को एक वस्तु के ही दो विभिन्न भाव मानते है। आज के समाज विज्ञानों को अपने विवेचन-विश्लेषण में इस प्रकार की दृष्टि रखनी होगी तभी वह पशुत्व से मनुष्यत्व और फिर देवत्व की ओर यात्रा में सहायक हो सकेंगे।

आज की सबसे बड़ी चुनौती भारत के बौद्धिक -शैक्षिक-अकादमी जगत को मैकाले, मिशनरी, मदरसा और मुद्रा केन्द्रित चिन्तन की जकड़न से बाहर निकालकर महर्षि दृष्टि पर आधारित भारत-केन्द्रित अध्ययन-अन्वेषण व चिन्तन को प्रारम्भ व प्रतिष्ठित करने की है। ऐसा दिखाई देता है। कि अनेक प्रकार की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के बावजूद विश्व के विद्वान-विचारक पश्चिमी देशों के समाज की प्रगति की वर्तमान दृष्टि, दिशा दशा और समाजिक-आर्थिक-राजनैतिक संरचना से संतुष्ट नहीं हैं। विभिन्न व्यवस्थाओं, नीतियों, दर्शन एवं दृष्टिकोणों के दीर्घकालीन अनुभवों के बाद आज समूचा संसार एक नई वैकल्पिक व्यवस्था एवं दृष्टिकोण की बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा है। विकल्प की तलाश के इस काल खण्ड में भारतीय मनीषियों द्वारा दी गई व्यवस्थाओं एवं उनके द्वारा प्रकट किये गये विचार व सिद्धान्त हमें इस नई संरचना के लिए मार्ग दर्शन सूत्र प्रदान कर सकते हैं। इन मूलभूत आधारसूत्रों को पकड़कर नई संरचना का मॉडल प्रस्तुत करने का

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

काम आज की भारतीय मनीषा और भारत के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों को करना है- यही उनके सामने युगीन चुनौती है।

दुर्भाग्य से आज भी हमारा बौद्धिक-अकादमी जगत बहुत कुछ यूरो-अमेरिकी बुद्धि तथा मार्क्स की वर्ग-संघर्ष की दृष्टि, मान्यताओं, विश्वासों और तर्क प्रणाली पर आधारित हैं परिणामस्वरूप, अभी के इतिहास, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि इन्हीं से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि हम इस बन्द चौखटे से मुक्त हों और भारतीय चित्त, मानव व काल की योग्य समझ विकसित करें। पर इस देश का तथाकथित शिक्षित व संभ्रान्त वर्ग तो पश्चिमी चित्त, मानस व काल की दृष्टि से ही भारतीय समाज को देखने-समझने, जाँचने-परखने और इसका मूल्याँकन करने का काम कर रहा है। और इस क्रम में उन्होंने भारत के आम आदमी को भारतीय चित्त, मानस व काल की संकल्पनाओं और उसकी समझ को ही नकारना शुरू कर दिया है। इस प्रकार भारत का बुद्धिजीवी भारतीय मन को न तो समझाना चाहता है और न ही समझ पा रहा है। आन्तरिक शिथिलता और विदेशी आक्रमणों के कारण हमारी सब संस्थाये-व्यवस्थायें बिखर गई, कमजोर पड़ गई और चिन्तन का प्रवाह अवरुद्ध हो गया या विषाक्त हो गया अंग्रेजी शासकों ने तो सामाजिक व्यवस्थाओं को ध्वस्त करने के साथ-साथ शिक्षा के माध्यम से मन और बुद्धि पर भी कब्जा जमाने का प्रयास किया। कुल मिलाकर देश की सम्पूर्ण सामाजिक- आर्थिक-राजनैतिक संरचना में से भारतीयता लुप्तप्राय हो गयी। ऐसी स्थिति में नई राह बनाने का दायित्व भारत के सामाजिक विज्ञानों पर है। प्रसिद्ध मार्क्सवादी चिन्तक प्रो. बालगंगाधर तिलक ने प्रामाणिकता से स्वीकार करते हुए कहा था कि, मैं लगभग दो-ढाई दशक तक गलत रास्ते पर चलता रहा, पर आवश्यकता है कि हम सब मिलकर सामाजिक विज्ञानों को औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्त करने के बारे में सोचें। इसके लिए हमें भारत के सामान्य जन के मन को समझते हुए उसके मन के अन्दर चल रही भाव-भावनाओं व विचारों को स्वर देना होगा। साथ ही, विश्व परिदृश्य और विश्व सभ्यताओं को भारतीय दृष्टि से देखने-समझने का प्रयास करना होगा।

भारतीय चित्त व मानस को समझने के लिए हमें अपने सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को पढ़-समझकर और इतिहास के घटनाक्रम का विभिन्न स्थानीय स्त्रोतों, रिकार्डों एवं पुराने ग्रन्थों के आधार पर योग्य विवेचन कर यह देखना होगा कि इस देश के मानस का और उसकी विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व्याप्तियों का क्या चित्र उभरता है और वह चित्र समय-समय पर कैसे बदलता रहा है। पर आज तो भारत के प्राचीन मनीषियों द्वारा वर्षों की साधना से प्राप्त ज्ञान-राशि के अध्ययन-अन्वेषण का वर्तमान विद्यालयों-विश्वविद्यालयों में कोई स्थान ही नहीं रह गया है। वहाँ तो आधुनिकता के नाम पर पश्चिम की सब संकल्पनाओं व संस्थाओं को ही भारत पर लादने का प्रयास होता है। उदाहरण के लिए आज के समाज विज्ञानों में हम आर्थिक विकास, आर्थिक क्रियाकलापों के वर्गीकरण, आर्थिक प्रणाली, राजनैतिक प्रणाली, चुनाव प्रणाली, शासन-प्रशासन के तौर-तरीके, तंत्र, कानून, संविधान, परिवार व विवाह संस्थायें, स्त्री-पुरूष सम्बन्ध, Living Together सामाजिक नाते-रिश्ते, जाति-प्रजाति के विवेचन, राष्ट्र-राज्य सैक्यूलरिज्म, अल्पसंख्यकवाद, शिक्षा का दर्शन, शिक्षा प्रणाली, परीक्षा व मूल्यांकन प्रणाली, मनुष्य के मनोविज्ञान आदि से सम्बन्धित पश्चिमी विचार व संकल्पनायें ही पढ़ते-पढ़ाते हैं। इन सबको बदलकर भारतीय दृष्टि से सही व सटीक अध्ययन का क्रम प्रारम्भ करना होगा।

पश्चिमी चिन्तन कार्टेजियन-न्यूटोनियन दर्शन पर आधारित खण्डित यांत्रिक विश्वदृष्टि में से उपजा है। पश्चिमी चिन्तन की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि यह धरती के सीमित साधनों से असीमित प्रगति कर लेना चाहता है इसके कारण ही आपाधापी लूटखसोट, साम्राज्यवाद, शोषण, संघर्ष, विषमता, आतंक, अराजकता और सामाजिक सम्बन्धों में बिखराव व विघटन की स्थिति उत्पन्न होती जा रही है और सर्वसामान्य समाज में गरीबी, भूख, बीमारी एवं विषमता जैसी समस्यायें बढ़ती जा रही हैं। पश्चिमी चिन्तन के विपरीत भारतीय मनीषियों ने सर्वक एकात्म विश्वदृष्टि को स्वीकार किया था। इसी को विज्ञान की नवीनतम खोजों ने अब अविभाज्य समग्रता (Unbroken Wholeness) की संकल्पना का नाम दिया है। हमारे मनीषियों ने प्रारम्भ से ही इस सत्य का दर्शन कर लिया था और इसलिये कहा था कि - 'यत्पिण्डे तत्ब्रह्मण्डे' एवं 'सर्वं खल्वविदं ब्रह्म'।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292
An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित
Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ

- डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
प्रख्यात अर्थचिन्तक एवं भूतपूर्व उपाचार्य, श्रद्धानन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

अभी हाल ही में विज्ञान ने ईश्वरीय कण (God Particle) की खोज करके भारतीय चिन्तन के निकट पहुँचने का प्रयत्न किया है। इसी आधार पर यह कहा गया कि व्यष्टि, समष्टि और सृष्टि ये अलग-अलग और स्वतंत्र इकाइयाँ नहीं हैं अपितु इनके बीच सावयवी अंगांगी सम्बन्ध है, अतः इनके बीच एकलयता और एकरसता बनाये रखने वाली संरचनायें और तालमेल करते हुए रहना चाहिए और इसी को आधार बनाकर सम्पूर्ण संरचना का निर्माण करना चाहिए। भारतीय मनीषियों द्वारा समाज जीवन के विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में जो व्यवस्थायें व दिशा-निर्देश दिये गये हैं, उन सबमें प्रकृति के साथ सह अस्तित्व, सामंजस्य और सौहार्द्र के साथ मातृभाव युक्त सम्मान दृष्टि का ही विधान मिलता है। इस समग्र एकात्म चिन्तन के आधार पर भारतीय मनीषियों ने जिस संरचना का विकास किया था, आज के संदर्भ में उसे पुनर्परिभाषित और पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। भारतीय चिन्तन ने विभिन्न समस्याओं का समाधान मानवीय, नैतिक, आध्यात्मिक एवं एकात्म जीवन दृष्टि के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसमें यह माना गया है कि कोई भी समस्या एकाकी एकांगी नहीं होती, इसके अनेक पहलू होते हैं, अतः समाधान भी अन्तर्निभर होंगें। इसके लिए हमें अन्तर्शास्त्रीय (Inter-disciplinary of trans disciplinary) शोध दृष्टि अपनानी होगी। इस प्रकार वर्तमान वैश्विक घटनाओं का यह तकाजा है कि भारत के विद्वान-मनीषियों भारत के शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रकाश में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के माध्यम से उन संकल्पनाओं-सिद्धान्तों को प्रस्तुत करें जो सर्वतोमुखी लोकमंगल की राह दिखा सके।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN